विचार बिन्दु

अपने शत्रु से प्रेम करो, जो तुम्हें सताए उसके लिए प्रार्थना करो। -ईसा

आंकड़ों के भ्रम जाल में उलझी भारत की गरीबी

भारत की गरीबी आज भी आंकड़ों के भ्रम जाल में उलझी हुई है। आजादी के 75 सालों के बाद भारत में गरीब और गरीबी पर लगातार अध्ययन और खुलासा हो रहा है। इसका मतलब है सरकार के लाख प्रयासों के बाद भी देश में गरीबी कम होने का नाम नहीं ले रही है। आज भी हमारा देश अमीरी और गरीबी का खेल खेल रहा है। यह हमारे लिए दुर्भाग्यजनक है। देश में अमीरीं और गरीबी के हालात पर गौर करें तो पाएंगे कि अमीर दिन-प्रतिदिन अमीर होता जा रहा है और गरीब की गरीबी लगातार बढ़ती ही जा रही है। इस बात को हमने अक्सर सुना है लेकिन ये सच साबित होती दिख रही है। देश में अमीर-गरीब के बीच खाई बढ़ती ही जा रही है। इससे लगता है कि केंद्र सरकार की तमाम कोशिशों के बाद भी इसमें किसी तरह की कोई कमी नहीं आई है। भारत में आर्थिक विकास का लाभ कुछ ही लोगों को मिल रहा है। यह चिंता की बात है। अरबपति की संख्या में बढ़ोत्तरी संपन्न अर्थव्यवस्था का संकेत नहीं है। यह असफल आर्थिक व्यवस्था का एक लक्षण है। अमीरी और गरीबी के बीच बढ़ता विभाजन लोकतंत्र को कमजोर करता है और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है।

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के मद्देनज़र राजनीतिक पार्टियों नें अमीरी-गरीबी पर सियासत शुरू कर दी है। कांग्रेस मोदी सरकार पर गरीबी बढ़ाने का आरोप लगा रही है तो भाजपा इसके लिए कांग्रेस को जिम्मेदार बता रही है । कुछ सर्वेक्षणों में मोदी राज में भारत में गरीबी घटने की बात कही गयी थी तो हाल ही आये कुछ सर्वेक्षणों में गरीबी बढ़ती बताई जा रही है। कुल मिलाकर देखा जाये तो देश की गरीबी आंकड़ों के मायाजाल में फंसी दिखाई दे रही है। विभिन्न स्तरों पर गरीबी खत्म किये जाने के दावे स्वतंत्र विश्लेषक सही नहीं मानते हैं। मगर यह अवश्य कहा जा सकता है कि पिछले एक दशक में गरीबी उन्मूलन के प्रयास जरूर सिरे चढ़े हैं। सरकारी स्तर पर यदि ईमानदारी से प्रयास किये जाये और जन-धन का दुरूपयोग नहीं हो तो भारत शीघ्र गरीबी के अभिशाप से मुक्त हो सकता है।

हाल ही के विभिन्न आर्थिक सर्वेक्षणों पर यकीन करें तो हमारे देश में पिछले कुछ वर्षों में गरीबी और अमीरी के बीच खाई बढ़ती ही जा रही है। इसका मतलब साफ है गरीबों की आय में गिरावट और अमीरों की आय में वृद्धि होती जा रही है। विशेषकर कोरोना महामारी के दौरान लगाए गए लॉकडाउन और अन्य बंदिशों का सबसे अधिक असर कमजोर वर्ग पर पड़ा है। आंकड़ों के मुताबिक भारत में जहां गरीबों की आमदनी में 53 फीसदी की गिरावट देखी गई है, वहीं अमीरों की कमाई में लगातार वृद्धि हुई है। हालांकि भारत ही नहीं अपितु दुनियाभर में कोरोना महामारी कहर बनकर टूटी है।

पीपल्स रिसर्च ऑन इंडियाज कंज्यूमर इकॉनमी के सर्वेक्षण में कहा गया है कि पिछले पांच वर्षों में सबसे गरीब 20 प्रतिशत भारतीय परिवारों की सालाना घरेलू आय करीब 53 प्रतिशत कम हो गई। इसी तरह, निम्न मध्यम वर्ग के 20 प्रतिशत लोगों की घरेलू आय भी 32 प्रतिशत घट गई। इस सर्वेक्षण के अनुसार, बीते पांच वर्षों के दौरान देश के सबसे अमीर 20 प्रतिशत लोगों की आय 39 प्रतिशत बढ़ गई।

पीपल्स रिसर्च ऑन इंडियाज कंज्यूमर इकॉनमी के सर्वेक्षण में कहा गया है कि पिछले पांच वर्षों में सबसे गरीब 20 प्रतिशत भारतीय परिवारों की सालाना घरेलू आय करीब 53 प्रतिशत कम हो गई। इसी तरह, निम्न मध्यम वर्ग के 20 प्रतिशत लोगों की घरेलू आय भी 32 प्रतिशत घट गई। इस सर्वेक्षण के अनुसार, बीते पांच वर्षों के दौरान देश के सबसे अमीर 20 प्रतिशत लोगों की आय 39 प्रतिशत बढ़ गई। यह सर्वेक्षण मुंबई स्थित पीपल्स रिसर्च ऑन इंडियाज कंज्यूमर इकॉनमी संस्थान ने अप्रैल से अक्टूबर 2021 के बीच कराया था। इसे 100 जिलों के 120 नगरों और 800 गांवों में कराया गया। इससे पूर्व वर्ल्ड इकॉनमिक फोरम में ऑक्स फैम की एक रिपोर्ट जारी की गई। जिसमें बताया गया असमानता यूं तो पूरी दुनिया में बढ़ी है, लेकिन भारत में स्थिति बहुत गंभीर है। यहां मार्च 2020 से नवंबर 2021 तक 4.6 करोड़ लोग एक्सट्रीम पॉवर्टी में चले गए। पूरी दुनिया में इस बीच जितने लोग गरीबी की दलदल में फंसे, यह संख्या उसकी आधी है। मार्च 2020 से नवंबर 2021 के बीच देश के 84 फीसदी परिवारों की कमाई में कमी आई। शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी दर 15 फीसदी से ऊपर चली गई लेकिन इसी दौर में देश के अरबपतियों की संख्या 102 से बढ़कर 142 हो गई, जबकि उनकी संपत्ति 23.1 लाख करोड़ से बढ़कर 53.2 लाख करोड़ तक जा पहुंची। इस दौर में भारत अरबपतियों की संख्या के मामले में अमेरिका और चीन के बाद तीसरे नंबर पर पहुंच गया। भारत में आज इतने अरबपति हैं, जितने फ्रांस, स्वीडन और स्विट्जरलैंड को मिलाकर भी नहीं हैं।

दुनिया से जब तक अमीरी और गरीबी की खाई नहीं मिटेगी तब तक भूख के खिलाफ संघर्ष यूँ ही जारी रहेगा। चाहे जितना चेतना और जागरूकता के गीत गा लो कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। अब तो यह मानने वालों की तादाद कम नहीं है कि जब तक धरती और आसमान रहेगा तब तक आदम जात अमीरी और गरीबी नामक दो वर्गों में बंटा रहेगा। शोषक और शोषित की परिभाषा समय के साथ बदलती रहेगी मगर भूख और गरीबी का तांडव कायम रहेगा। अमीरी और गरीबी का अंतर कम जरूर हो सकता है मगर इसके लिए हमें अपनी मानसिकता बदलनी पड़ेगी। प्रत्येक संपन्न देश और व्यक्ति को संकल्पबद्धता के साथ गरीब की रोजी और रोटी का माकूल प्रबंध करना होगा। आज भारत विश्व भुखमरी सूचकांक में बेहद लज्जाजनक सोपान पर खड़ा है तो इसके पीछे भ्रष्टाचार, योजनाओं के क्रियान्वयन में खामियां और गरीबों के प्रति राज्यतंत्र की संवेदनहीनता जैसे कारण ही प्रमुख है। गरीबी भूख और कुपोषण से लड़ाई तब तक नहीं जीती जा सकती है, जब तक कि इसके अभियान की निरंतर निगरानी नहीं की जाएगी।

- अतिथि संपादक
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल मंगलवार 8 फरवरी, 2022

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, मंगलवार, विक्रम सम्वत 2078, भरणी नक्षत्र रात्रि 9.27 तक, शुक्ल योग सायं 5.05 तक, विष्टिकरण सायं 7.23 तक, चन्द्रमा रात्रि 4.09 पर वृष राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थिति : सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मेष, मंगल-धनु, बुध-मकर, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, मकर-राहु, केतु-वृष राशि में संचार करेगा।

स्वार्थ सिद्धि योग और ज्वालामुखी योग, रात्रि 9.27 से आरंभ होगा। भद्रा प्रात: 6.23 से सायं 7.23 तक रहेगी। आज दुर्गाष्टमी, भीमाष्टमी, भौमअष्टमी है।
राहुकाल 3.00 से 4.30 तक सूर्योदय 7.15 सूर्यास्त 6.09

मेष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य में प्रगति होगी। नौकरी पेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

सिंह
धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों में उचित परामर्श मिल सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

वृष
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मकर
घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में सुख-सुविधायें बढ़ेंगी। पारिवारिक व व्यावसायिक कार्य से संबंधित यात्रा संभव है। परिवार में प्रसन्नता का माहौल रहेगा।

मिथुन
आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

तुला
व्यावसायिक सम्पर्क बनेंग। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ कार्य संपन्न हो सकते हैं।

कुंभ
व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे, नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृश्चिक
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों में राहत मिल सकती है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भाग-दौड़ रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक सामाजिक समारोह संपन्न हो सकते हैं।

इकॉनोमी को सहेजता लाचार किसान

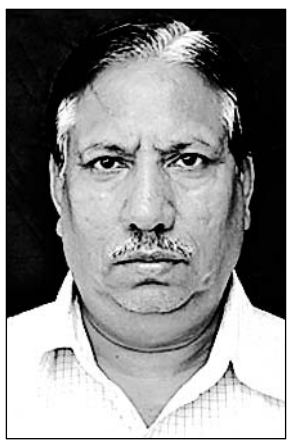

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

किसानों की आय में बढ़ोतरी के लाख दावे किए जा रहे हों पर सरकार के ही नेशनल सैंपल सर्वे की हालिया रिपोर्ट कहानी कुछ और ही बयां कर रही है। एनएसएस सर्वे की ही मानें तो जुलाई, 2018 से जून 2019 के बीच जुटाए गए आंकड़ों से यह साफ हो गया है कि किसानों की खेती से औसत मासिक आय केवल और केवल मात्र 829 रु. ही है। यानी कि खेती किसानी भले ही अर्थ व्यवस्था को मजबूत आधार प्रदान कर रही है पर इसमें हाड़तोड़ मेहनत करने वाले किसान के लिए तो खेती आजादी के 75 साल बाद भी फायदे का सौदा नहीं बन पाई है। हालांकि यह निकश दो साल पुराने आंकड़ों के आधार पर है पर कमोबेस हालातों में कोई ज्यादा बदलाव नहीं देखा जा सकता। दरअसल खेती में आय की तुलना में लागत में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। सरकारों का अब जीरो बजटिंग खेती की बात करने का एक बड़ा कारण यह भी हो सकता है। परंपरागत खेती की और किसानों को ले जाने की बात होने लगी है। इसमें कोई दो राय नहीं कि देश में कृषि उत्पादन में खासा बढ़ोतरी हुई है। इससे भी दो राय नहीं हो सकती कि कृषि निर्यात भी बढ़ा है। पर खाद-बीज से लेकर सिंचाई के लिए पानी, बिजली, उपकरण, श्रम लागत सभी महंगे हुए हैं। दूसरी ओर फसल आने के समय उनके पूरे भाव मिलना आज भी किसानों के लिए मुश्किल भरा है। एमएसपी पर शत-प्रतिशत खरीद की बात पर हो सकता है। विशेषज्ञ इसीलिए जोर दे रहे हो, पर यह नहीं भूलना चाहिए कि लाख प्रयासों के बावजूद समर्थन मूल्य पर खरीद व्यवस्था ले देकर गेहूं, चावल, गन्ना, कपास, सरसों, सोयाबीन, उड़द-मूंग से आगे नहीं निकल पाई है। अन्नदाता को अपनी उपज का भाव खुद तय करने की बात करना तो अभी बेमानी ही होगा।

यह सब तो तब है जब आर्थिक विश्लेषक यह साफ कर चुके हैं कि अर्थ व्यवस्था या यों कहें कि जीडीपी को उपर-नीचे करने में खेती किसानी की बड़ी भूमिका है। दो साल के कोरोना के कटु अनुभव ने यह सिद्ध कर दिया है कि जिंदगानी बचाने का खेती ही बड़ा आधार है। सवाल यह उठता है कि इस खेती किसानी के मालिक अन्नदाता किसान के हालात कब और कैसे सुधरेंगे। पिछले दिनों तीन कृषि बिलों को लेकर हुए आंदोलन सामने हैं। हालांकि अब तीनों बिल वापस ले लिए गए हैं ऐसे में उनका विश्लेषण करना कोई मायने नहीं रखता। किसानों के नाम पर स्वामीनाथन आयोग का राग भी खूब अलापा जा रहा है और अब पांच राज्यों में चुनावी बिगुल बजने वाला है। किसानों के कर्जे माफी से लेकर ना जाने कि वायदे किए जाएंगे। ऐसा नहीं है कि यह पहली बार होगा अपितु यह तो चुनावी एजेंडा ही बन गया है। किसान आंदोलन और कृषि बिलों के गुणावगुण को लेकर वोट मिलने नहीं मिलने का आकलन किया जा रहा है। यह सब सामने है पर यक्ष प्रश्न यही है कि आखिर अन्नदाता इन लॉलीपॉप के भरोसे कब तक चलेगा। ऐसा नही है कि नेशलन सैंपल सर्वे ने यों ही निष्कर्ष निकाल लिया हो अपितु बड़ी बारीकी से अध्ययन किया गया है। यदि रिपोर्ट की माने तो किसान की औसत आय 10218 रु. आंकी गई है। इसमें से फसल से होने वाली आय 3798 रुपए आती है। 1582 रु. पशुपालन से तो 4063 रु. बतौर वेतन मानी गई है। अन्य छुटपुट आय अलग। अब खेती की औसत मासिक आय 3798 में से 2959 रु. तो खेती पर ही खर्च हो जाते हैं। इनमें खाद-बीज, कीटनाशक, सिंचाई, बिजली या डीजल, उपकरण, मजदूरी आदि खर्चे जोडे जाते हैं तो यह 2959 रु. हो जाते हैं। यानी कि हाडतोड मेहनत के बाद किसान पाता है 839 रु. प्रतिमाह।

यक्ष प्रश्न वहीं का वहीं रह जाता है कि आखिर किसानों को उनकी मेहनत का पूरा पैसा कैसे मिले या यों समझें कि खेती-किसानी कैसे लाभ का सौदा बने। यह तो अब साफ होता जा रहा है कि नई पीढ़ी की खेती किसानी में रुचि दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है। शहरों की ओर पलायन होता जा रहा है। पर कोरोना के पहले दौर को याद करना बेहतर होगा। जब प्रवासी श्रमिकों का रेला का रेला गांवों की ओर प्रस्थान कर रहा था। बड़ी ही डरावनी तस्वीर देख चुके हैं। हालांकि हालातों में अभी भी ज्यादा बदलाव इसलिए नहीं माना जा सकता कि कोरोना की तीसरी लहर की चेतावनी सामने है। हालात वैसे बनते भी जा रहे हैं कोरोना के नए दैत्यावतार ओमीक्रॉन के संक्रमण की रफ्तार चिंता का कारण बनती जा रही है। ऐसे में गांवों पर निर्भरता बढ़ेगी। इसलिए देश दुनिया की सरकारों को गांव आधारित अर्थव्यवस्था बनानी ही होगी। इस तरह का मॉडल विकसित करना पड़ेगा जिससे गांवों में खेती और रोजगार दोनों के अवसर विकसित हो सकें।

यह विषयांतर होगा पर मूल यही कि किसानों की औसत आय बढ़ाने के ठोस प्रयास करने ही होंगे। इसके लिए कृषि विज्ञानियों, अर्थशास्त्रियों, नीति निर्माताओं को गंभीर मंथन करना होगा। लॉलीपॉप के रुप में तात्कालिक लाभ की घोषणाओं से कोई फायदा नहीं होने वाला है। देश जानता है कि ऋण माफी की कई घोषणाएं हो चुकी हैं यदि इसी से अन्नदाता का भविष्य सुधरना होता तो हर चुनाव के पहले कर्ज माफी का बिगुल नहीं बजाना पड़ता। कोई ना कोई ठोस प्रयास करने ही होंगे। इसके लिए सरकारें यदि चाहे तो दीर्घकालीन नीति बनाकर आगे बढ़ सकती हैं। एक तरीका यह भी हो सकता है कि अन्नदाता का नकद लाभ देने के स्थान पर उन्नत बीज, खाद, कीटनाशी आदि नि:शुल्क या सस्ती दर पर उपलब्ध कराया जाए ताकि यह आदान खेती किसानी में ही काम आकर उत्पादन बढ़ाने में सहायक हो, फिर खरीद की भी समुचित व्यवस्था हो तो हालातों में सुधार देखे जा सकते हैं। इसका एक और लाभ होगा कि तिलहन-दलहन जैसी फसलों के उत्पादन के लिए किसानों को प्रेरित किया जा सकेगा और देश इस क्षेत्र में भी आत्म निर्भर हो सकेगा, विदेशों से आयात पर खर्च होने वाली अरबों रुपए की विदेशी मुद्रा बचेगी। इस तरह के अनेकानेक उपायों पर मंथन और क्रियान्वयन का अब समय आ गया है। इसलिए समय रहते ठोस प्रयास करने ही होंगे।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

मरू महोत्सव से पूर्व कलेक्टर ने की गड़ीसर पर सफाई

जैसलमेर, (नि.सं.)। कलेक्टर डॉ प्रतिभा सिंह ने मरू महोत्सव से पूर्व झाड़ू लेकर गडीसर सरोवर पर सफाई अभियान की शुरुआत की।

गडीसर सरोवर पर सैकडों लोगों ने इस मुहिम में हिस्सा लेकर गडीसर सरोवर की सफाई की। आगमी 13 फरवरी से शुरू होने जा रहे मरू महोत्सव को देखते हुए पर्यटन स्थलों को साफ सुथरा रखने की मुहिम सोमवार से शुरू हुई। जिला कलेक्टर ने कहा कि हर टूरिस्ट प्लेस को चमकाएंगे ताकि आने वाले सैलानियों को स्वर्ण नगरी साफ सुथरी नजर आए। सफाई अभियान के दौरान जिला कलेक्टर के साथ नगर परिषद सभापति हरिवल्लभ कल्ला , पूर्व जिला प्रमुख और जिला परिषद सदस्य अंजना मेघवाल, नगर परिषद आयुक्त शशिकांत शर्मा , सिविल डिफेंस , स्काउट गाइड , नेहरू युवा केन्द्र के सद्स्यों सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

■ **'हर टूरिस्ट प्लेस को चमकाएंगे ताकि आने वाले सैलानियों को स्वर्ण नगरी साफ सुथरी नजर आए'**

मरू महोत्सव से पूर्व कलेक्टर डा. प्रतिभा सिंह ने गड़ीसर सरोवर में सफाई अभियान चलाया।

एक सौ सात बसंत देखने के बाद वृद्धा का देवलोकगमन

खैरथल, (निसं)। वर्तमान समय में जहां मानव जीवन की औसत आयु निरंतर घट रही है, ऐसे में एक मातृशक्ति एक सौ सात साल स्वस्थ आयु को प्राप्त करने के बाद देवलोक सिधार गई।

शहर की पुरानी मंडी के पैट्रोल पम्प के समीप रहने वाली मोहरादेवी ने अपने जीवन के 107 बसंत ऋतु पूरी तरह से स्वस्थ रहते हुए सोमवार को परलोक सिधार गई। नामदेव रोहिल्ला समाज के प्रदेश अध्यक्ष टेलर मास्टर मोहनलाल ने बताया कि उनकी माता जी धार्मिक प्रवृत्ति की होने के साथ सात्विक भोजन और सनातनी परंपरा का पालन करने वाली थी। सोमवार को भोर के समय अचानक ही उनकी हृदय गति रुक गई। उन्होंने बताया कि माताजी को एक सौ साल की उम्र में फिर से दांत निकलने लगे थे और सिर के बाल भी काले हो गये थे।

एक सौ सात साल उम्र की जीवन जीने वाली महिला।

बेजुबानों के लिए फरिश्ता बन रहा है कोटपूतली का गोविन्द

कोटपूतली। किसी ने सही कहा कि अपने लिये तो हर कोई जीता है जो बेजुबान जीवों लिए जीता है उसे ही जीवन कहते हैं ।

घटना पावटा निकटवर्ती ग्राम बावडी में पाउडर फैक्ट्री के सामने रविवार शाम सात बजे कुछ श्वानों ने एक नील गाय पर हमला कर उसे घायल कर दिया, जिसे ग्रामीणों ने छुड़ाकर घटना की सूचना एल.एस.ए. गोविन्द भारद्वाज को दी। सूचना मिलते ही भारद्वाज ने परिवार के सदस्यों के साथ मौके पर पहुँचकर घायल नील गाय का उपचार किया। उपचार के बाद नील गाय की हालत में सुधार है । इस दौरान डॉ गौरीशंकर शर्मा मामराज कुमावत, जीव प्रेमी मोहित शर्मा, मनोज बंसल, विक्रम अम्बीकेश्वर, सुरेश गिठाला, कैलाश ताखर आदि ने उपचार में मदद की।

गौरतलब है कि भारद्वाज अपने भतीजे देवेन्द्र की बारात में जा रहे थे तभी उन्होंने पहले बेजुबान जीव का उपचार करना जरूरी समझा। उन्होंने बेजुबान जीव का उपचार कर एक विशेष सन्देश दिया है। डॉ गौरीशंकर शर्मा ने बताया कि मनुष्य अपनी पीड़ा व्यक्त कर सकता है। ये बेजुबान अपनी पीडा व्यक्त नही कर सकते है। इनका जीवन बचाना ही हमारा परम धर्म है।

■ **भतीजे की बारात मे जाते समय रास्ते में किया घायल नील गाय का उपचार**

पावटा निकटवर्ती ग्राम बावडी में पाउडर फैक्ट्री के सामने कुछ श्वानों ने एक नील गाय को घायल कर दिया जिसकी की सूचना पर एल.एस.ए. गोविन्द भारद्वाज ने मौके पर पहुंचकर उपचार किया।

करौली में पशु मेला 16 से 23 तक

करौली (निं.स) संयुक्त निदेशक डॉ. खुशीराम मीना ने बताया कि जिले में 16 से 23 फरवरी तक पशु मेला आयोजित किया जायेगा व 11 फरवरी से पशु मेले की चौकी स्थापित हो जायेगी।

इस संबंध में उन्होंने बताया कि उच्च न्यायालय के निर्देशानुसार पशुपालक मेले में पशु खरीदेगा उसे मेला अधिकारी अथवा उनके द्वारा मनोनीत अधिकारी को आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत करना अतिआवश्यक है। उन्होंने बताया कि क्रेता को स्वयं के नाम की जमाबंदी की नकल कृषि भूमि होने बाबत् दस्तावेज एवं पहचान पत्र की प्रति, क्रय किये गये पशुओं को कृषि कार्य, दूध उत्पादन में उपयोग में लेने का शपथ पत्र, क्रय किये गये पशु को ईयर टैग लगवाना एवं पशु स्वास्थ्य प्रमाण जारी करवाना आवश्यक है। पशु परिवहन के उपयोग में आने वाले बडे ट्रक मे 6 बडे पशु से अधिक नही होने चाहिए तथा वाहन में पशुओं के पैरों के नीचे कुशन एवं साईडों में बोरी लटकानी होगी ताकि उनकी खाल नही छिले।इसके साथ ही पशु परिवहन के समय वाहन के साथ पशुओं की देखभाल,चारा,पानी के लिए श्रमिक सहायक के रूप मे चलना चाहिए।

नोखा और लूणकरनसर के दो युवकों ने विवाह में दहेज के बजाय एक रुपया और नारियल लिया

बीकानेर, (कासं)। विवाह में लाखों रुपए के गिफ्ट्स लेने की परम्पराओं के इस दौरान में लूणकरनसर और नोखा के दो सामान्य युवकों ने महज नारियल और एक रुपया लेकर मिसाल पेश कर दी है। धीरेरां गांव के विकास गोदारा और नोखा के सिंजगुरु गांव के मूलचंद पिलानिया ने बिना दहेज शादी करते हुए हम उम्र युवाओं को बड़ा संदेश दिया है।

लूणकरणसर के विकास का विवाह श्रीविजयनगर के हरीसिंहपुरा निवासी आत्माराम नेहरा की बेटी रेखा से हुई। दुल्हन के पिता ने फेरे की रस्मों के बीच लेनदेन, नकदी सहित सभी रीति-रिवाज पूरे करने की जिद की तैयारी कर रखी थी। कई तरह के बड़े उपहार और नगदी तक देने की परम्परा शुरू होने ही वाली थी कि विकास ने कुछ भी लेने से साफ मना कर दिया। दूल्हे विकास के नाना हरीराम धतरवाल ने उसकी भावनाओं का समर्थन किया तो बारात में आए सभी लोगों ने इस निर्णय की सराहना की। विवाह के दौरान रिश्तेदारों को कुछ रुपए देने की परम्परा (मिलनियां) भी नहीं हुई। एक दूसरे को अंगूठी पहनाने की रस्म भी नहीं रखी गई।

दूल्हे विकास और दुल्हन मोनिका दोनों ग्रेजुएट हैं। दोनों ही प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। हरीराम धतरवाल ने बताया कि शादियों में दहेज की कामना रखने वालों को संदेश देने के लिए ये पहल की है। बहू के रूप में कन्या धन की प्राप्ति होने के बाद दहेज कोई मायने नहीं रखता। विकास ने बताया कि उसे खुशी है कि शादी बिना दहेज हुई। उल्लेखनीय है कि विकास से छोटे दो भाई और हैं जिन्हें विकास पढ़ा रहे हैं,विकास खुद बीकानेर में प्राइवेट नौकरी कर अपना घर चला रहे हैं। उधर, नोखा के मूलचंद पिलानिया ने भी महज एक रुपए और नारियल लेकर दहेज जैसी कुप्रथा को हटाने का संकल्प लिया। सिंजगुरू निवासी रामचन्द्र पिलानिया ने बेटे मूलचंद की शादी बिना दहेज की। दुल्हन पक्ष से सिर्फ एक रुपए नारियल लेकर पूरी शादी की।

बीकानेर निवासी श्रीराम कुंदन की बेटी मोनिका से मूलचंद का विवाह हुआ। दुल्हन के पिता ने फेरे की रस्मों के बीच लेनदेन, नकदी सहित सभी रीति-रिवाज पूरे करने की जिद की। दूल्हे के पिता रामचन्द्र पिलानिया ने शादी में हर चीज के लिए साफ मना कर दिया। इसके अलावा बैंडबाजा किराया तक भी दुल्हन पक्ष से नहीं लिया। दूल्हा मूलचंद सरकारी स्कूल में टीचर है और दुल्हन मोनिका भी शिक्षित है। दूल्हे की मां रामप्यारी पिलानिया पूर्व में गांव की सरपंच रह चुकी है। पिलानिया ने बताया कि शादियों में दहेज की कामना रखने वालों को संदेश देने के लिए ये पहल की है। बहू के रूप में कन्या धन की प्राप्ति होने के बाद दहेज कोई मायने नहीं रखता। बदलते दौर में दहेज प्रथा एक बड़ी बुराई है। वर मूलचंद ने बताया कि उसे खुशी है कि शादी बिना दहेज हुई। रामचन्द्र पिलानिया के समधी श्रीराम कुंदन का कहना था कि अपनी हैसियत के अनुसार बेटी को कुछ देने की परम्परा निभाना चाहते हैं लेकिन वर पक्ष ने साफ मना कर दिया। ये बड़ा संदेश है।

■ **धीरेरां गांव के विकास गोदारा और नोखा के सिंजगुरु गांव के मूलचंद पिलानिया ने संदेश दिया है**

■ **'बहू के रूप में कन्या धन की प्राप्ति होने के बाद दहेज कोई मायने नहीं रखता'**